Extremist Movement
उग्रवादी आन्दोलन

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के द्वितीय चरण को उग्रवादी या क्रान्तिकारी आन्दोलन का युग कहा गया है। दोनों ही का एकमात्र उद्देश्य ब्रिटिश राज्य से मुक्ति एवं पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए लड़ रहे थे, दोनों के नेताओं में साहस, देशप्रेम, आत्मबलिदान, स्वतंत्रता और विदेशी शासन के प्रति घृणा के भाव थे। सक्रिय और उग्र राष्ट्रीयता उनकी आधारशिला थी। भारतीयों को संगठित एवं शक्तिशाली बनाकर वे संघर्ष के माध्यम से अपना अधिकार पाने की अभिलाषा रखते थे।

एक तरफ उग्रवादी विचारधारा के लोग बहिष्कार आन्दोलन को आधार बनाकर लड़ रहे थे तो दूसरी ओर क्रांतिकारी विचारधारा के लोग बमों और बन्दूकों के उपयोग से स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे। जहाँ एक ओर उग्रवादी शांतिपूर्ण सक्रिय राजनीतिक आन्दोलन में विश्वास करते थे वहीं क्रांतिकारी अंग्रेजों को भारत से भगाने में शक्ति एवं हिंसा के उपयोग में विश्वास करते थे। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल और लाल लाजपतराय उग्रवादी दल के प्रमुख नायक थे। तिलक ने यह घोषणा की कि "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे। आतंकवादी और उग्रवादी दोनों का अन्तिम लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य की स्थापना था।

भारतीय राजनीति में उग्रवादी आन्दोलन के उदय के कई कारण थे— (i) सरकार के सुधारों से असन्तोष (ii) आर्थिक कारण (iii) ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रियावादी नीति (iv) धार्मिक राष्ट्रवाद (v) अंग्रेजों द्वारा जातिभेद नीति का प्रचार (vi) भारतीयों युवकों के बीच भिक्षावृत्ति नीति के प्रति अविश्वास (vii) कर्जन की दमनकारीनीति (ix) पाश्चात्य क्रांतिकारी सिद्धान्तों का प्रभाव (x) लाल - बाल - पाल के नेतृत्व।

चार प्रमुख कांग्रेसी नेताओं - बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल एवं अरविन्द घोष ने भारत में उग्रवाद आन्दोलन का नेतृत्व किया इन नेताओं ने 'स्वराज्य' प्राप्ति को ही अपना प्रमुख लक्ष्य एवं उद्देश्य बनाया।

Scanned by TapScanner

जहाँ उदारवादी दल के नेता ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत 'औपनिवेशिक स्वशासन' चाहते थे वहीं उग्रवादी नेताओं का मानना था कि ब्रिटिश शासन का अन्त कर ही हम स्वराज्य या स्वशासन प्राप्त कर सकते हैं। ~~उग्रवादी नेता अहिंसात्मक~~ उदारवादी दल वैधानिक आंदोलन में, अंग्रेजों की न्यायप्रियता में, वार्षिक सम्मेलनों में, भाषण देने में, प्रस्ताव पारित करने में और इंग्लैण्ड को शिष्टमंडल भेजने में विश्वास करता था। उग्रवादी नेता अहिंसात्मक प्रतिरोध, सामूहिक आन्दोलन एवं आत्म ~~बलि~~ बलिदान में विश्वास करते थे।

राष्ट्रीय कांग्रेस के सूरत अधिवेशन के बाद अलग अलग हो जाने पर उग्रवादियों का प्रभाव कांग्रेस के अन्दर नहीं रहा। वे कांग्रेस के पुराने नेताओं को पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित मानते थे और उनकी कटु आलोचना करते थे। उदारवादियों की प्रगतिशील प्रवृत्तियों को वे पसन्द करते थे और सामाजिक रूढ़िवादि शक्तियों के आधार पर राष्ट्रीय आन्दोलन खड़ा करना चाहते थे। ~~तिलक~~ तिलक जैसे नेता ने एज ऑफ कंसेंट का विरोध किया और गौ-रक्षा-समिति की स्थापना, गणपति पूजा और शिवाजी-समारोह का आयोजन कर धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन के बीच सामंजस्य की स्थापना की चेष्टा की।

अपनी माँगों को मनवाने के लिए उदारवादियों की अनुनय-विनय की नीति को अस्वीकार करते हुए उसे उग्रवादियों ने 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी। तिलक ने कहा कि "हमारा उद्देश्य आत्मनिर्भरता है, भिक्षावृति नहीं" इन नेताओं ने विदेशी माल का बहिष्कार, स्वदेशी माल को अंगीकार कर राष्ट्रीय शिक्षा तथा सत्याग्रह के महत्व पर बल दिया। केवल विदेशी कपड़ें का ही बहिष्कार नहीं अपितु सरकारी स्कूलों, अदालतों, उपाधियों, सरकारी नौकरियों का बहिष्कार ~~इसमें~~ इसमें शामिल था।

1905 ई से 1914 ई० तक राष्ट्रीय आन्दोलन इस विभेद के फलस्वरूप कमजोर पड़ गया। आन्दोलन को शीघ्र ही दबा दिया गया फिर भी उग्रवादी आन्दोलन भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। उदारवादियों को अपनी नीति में परिवर्तन की आवश्यकता उग्रवादियों के विरोध के कारण ही हुई। राजनीतिक गतिविधि की तीव्रता की अवहेलना अंग्रेजी साम्राज्य के लिए असम्भव थी। उग्रवादियों में त्याग और बलिदान की भावना थी। उनके द्वारा तैयार की गयी पृष्ठभूमि पर गाँधीजी का सत्याग्रह-आन्दोलन सफल हो सका।

Scanned by TapScanner